-बापदादा एवं बडों के संकल्प हम कैसे पूरे करें?

बापदादा एवं बडों की हमारे प्रति विशेष आशाएं यही हैं कि हम भी बन्धनमुक्त, विघ्न जीत व विघ्न-विनाशक बनें, संस्कार परिवर्तन कर स्व परिवर्तन से विश्व परिवर्तन करें। बाप समान कर्मातीत बनें, दुआएं दें और दुआएं लें। बाबा का नाम प्रत्यक्ष करने के लिए फॉलो फादर करें। रहमदिल बनें एवं सत्य स्वरूप बन बडों को हल्का रखें।

1. हाँ जी का पाठ पक्का रख जो कहा वह करके दिखाना है, इसके लिए जो ईशारा मिले उसी प्रमाण चलने में अपना कल्याण समझना है।

2. बडों पर एवं बापदादा पर निश्चय रख श्रीमत का पालन करना है। हमें विश्वास हो कि इसी में हमारा कल्याण है और यही मेरे लिए श्रीमत है। बाहर के परदे पर भल अकल्याण नज़र आ रहा हो तो भी जिम्मेवार बाबा है।

जैसे बडे दादी जी से पूछा गया कि कम से कम पुरूषार्थ व ज्यादा से ज्यादा भाग्य की विधि क्या है? तो दादी जी ने कहा कि अपने से बडों को हल्का रखना चाहिए। हमारे ऊपर उनका ज्यादा समय, संकल्प व शक्ति व्यर्थ न जाए। मम्मा ने भी अपनी बुद्धि को पूरी तरह सरेण्डर किया था, कोई वेद शास्त्र नहीं पढे फिर भी ज्ञान की देवी सरस्वती कहलाई।

3. ऐसा समझें कि बाबा हमें बडों के द्वारा डायरेक्शन दे रहा है। इसलिए बडों से हमारा कनेक्शन क्लीयर हो।

4. यज्ञ के प्रति पूरी तरह ईमानदार रहें।

5. स्थूल व सूक्षम में अलबेलापन न हो। अलबेलापन होने से बापदादा व बडों की दिल पर नहीं चढ़ सकेंगे।

6. बडों के प्रति सच्चा स्नेह वह आदर रखें।

7. इस बात का अटेंशन रखें कि किसी की बुराई को देख हमारा चिन्तन खराब न हो। स्वयं को परिवर्तन कर दूसरों के आगे एक उदाहरण बनें।

8. साक्षीदृष्टा रहें। ड्रामा एक्यूरेट है। किसी के लिए समस्या का कारण न बन निवारण स्वरूप बनें।

9. किसी के प्रति वैर व घृणा भाव न रखें। कमजोर आत्माओं को सकाश दें। इसके लिए स्वस्थिति व सेवा का बैलेन्स रखें। अमृतवेला पावरफुल बनाएं।

10. अपने लक्ष्य को याद रखें और बाबा से की हुई प्रतिज्ञा दृढ़ता पूर्वक पूरी करें, तभी बाबा की समीपता का अनुभव कर सकेंगे।

11. कर्म व योग के बैलेन्स द्वारा हमारा हर्षितमुख चेहरा ऐसा हो जो सदा बापदादा का शो करें।

12. बाबा व बडों के साथ सच्चाई के साथ चलना है। जैसे हैं वेसा ही अपने को बडों के आगे प्रत्यक्ष करें।